

## Padma Shri



### **SRI DRONA BHUYAN**

Shri Drona Bhuyan is a great exponent of folk culture 'Suknani Ojapali and Deodhani dance”.

2. Born on 01<sup>st</sup> January, 1956, in the village Satgharia of Sipajhar in the district of Darrang, in a poor family, Sri Bhuyan spent his life with struggle. He had to stop studying after receiving the primary education for lack of money. He was interested more towards the Suknani Sangeet and Deodhani Dance. When he was only 7/8 years old, he started moving with his father for preparing “Jatra Party” and he was honoured in the society for his good acting in that young age. He acted in different dramas like 'Village Girl', 'Chandra Hangsa', 'Lalasar Balley' etc. His interests on Suknani Sangeet was more. His father sent him to accompany Mr. Ratneswar Bora a Oja of Suknani Ojapali for learning. In this way, he was attached with Ojapali Culture. He started practicing Ojapali under the leadership of Late Chandra Kanta Nath Oja, who was also a prominent leader.

3. Sri Bhuyan performed Suknani Ojapali and Deodhani Dance in the Pragati field of Delhi in 1972. He is expert in performing Drum. Now Sri Bhuyan is a successful leader of Suknani Sangeet and Deodhani Dance who has yet contributed more for the improvement of the performing art of Darrang District. As a regular artist of All India Radio Guwahati and Sangeet Natak Academy, he took part as a resource person in the workshops of performing art not only in Assam but also in the National School of Drama, Delhi, Guwahati, Dibrugarh and Tezpur Central University. He got the title of the “GURU” of traditional plan relating Guru and Sishya. He performed Suknani Sangeet in various festivals and social organization like Naamghar, Sangha, Educational Institutions etc. He established a training center in his own residence in 2009 to train interested artists. Now different types of performing arts are practiced here time to time. The centre is known as the “Traditional Performing Art Centre”.

4. Shri Bhuyan received many awards. Some of the awards are “GURU TITLE” from Ministry of Culture, Govt. of India in 2009, “MEERA AWARD 2012” organised by Rastriya Natya and Lok Kala Mahotsav in Agra, “Ek Kalin Bota 2019” and “Bishnu Rabha Bota 2021” by Cultural Affairs, Assam, Rabindra Bhawan, Guwahati and “Assam Gaurav Award” 2023.

## पद्म श्री



### श्री द्रोण भुइयां

श्री द्रोण भुइयां लोक संस्कृति 'सुकनानी ओजापल्ली और देवधनी नृत्य' के महान प्रतिपादक हैं।

- दिनांक 01 जनवरी, 1956 को दरांग जिले के सिपाझर के सतघरिया गांव में एक गरीब परिवार में जन्मे श्री भुइयां ने अपना जीवन संघर्षों में बिताया। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद पैसों के अभाव में उन्हें अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। सुकनानी संगीत और देवधनी नृत्य की ओर उनकी अधिक रुचि थी। जब वह मात्र 7/8 वर्ष के थे, तब वह अपने पिता के साथ "जात्रा पार्टी" की तैयारी करने के लिए जाना शुरू कर दिया और इतनी छोटी सी उम्र में उनके बढ़िया अभिनय के लिए उन्हें समाज में सम्मानित किया गया। उन्होंने 'विलेज गर्ल', 'चंद्र हंस', 'लालासर बाली' आदि विभिन्न नाटकों में अभिनय किया। सुकनानी संगीत में उनकी अधिक रुचि थी। उनके पिता ने उन्हें शिक्षा लेने के लिए सुकनानी ओजापल्ली के ओजा श्री रत्नेश्वर बोरा के यहाँ भेजा था। इस प्रकार वे ओजापल्ली संस्कृति से जुड़े। उन्होंने स्वर्गीय चंद्रकांत नाथ ओजा, जो एक प्रख्यात नेता भी थे, के नेतृत्व में ओजापल्ली का अभ्यास करना शुरू किया।
- श्री भुइयां ने वर्ष 1972 में दिल्ली के प्रगति मैदान में सुकनानी ओजापल्ली और देवधनी नृत्य का प्रदर्शन किया। वह ड्रम बजाने में भी माहिर हैं। अब श्री भुइयां सुकनानी संगीत और देवधनी नृत्य के एक सफल उस्ताद हैं जिन्होंने दरांग जिले की रंग-कला में सुधार के लिए और भी ज्यादा योगदान दिया है। ऑल इंडिया रेडियो गुवाहाटी और संगीत नाटक अकादमी के नियमित कलाकार के रूप में, उन्होंने न केवल असम में बल्कि नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली, गुवाहाटी, डिब्रूगढ़ और तेजपुर सेंद्रल यूनिवर्सिटी में रंग कला की कार्यशालाओं में एक रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा योजना के "गुरु" की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने विभिन्न उत्सवों और सामाजिक संगठनों जैसे नामघर, संघ, शैक्षणिक संस्थानों आदि में सुकनानी संगीत का प्रदर्शन किया। उन्होंने इच्छुक कलाकारों को प्रशिक्षित करने के लिए वर्ष 2009 में अपने निवास पर एक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की। अब यहां समय-समय पर विभिन्न प्रकार की रंग-कलाओं का अभ्यास कराया जाता है। केंद्र को "पारंपरिक रंग-कला केंद्र" के रूप में जाना जाता है।
- श्री भुइयां को कई पुरस्कार प्राप्त हुए। कुछ पुरस्कार इस प्रकार हैं:— वर्ष 2009 में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से "गुरु टाइल", आगरा में राष्ट्रीय नाट्य एवं लोक कला महोत्सव द्वारा आयोजित "मीरा पुरस्कार 2012", सांस्कृतिक मामले विभाग, असम, रवीन्द्र भवन गुवाहाटी द्वारा "एक कालीन बोट 2019", एवं "बिष्णु राभा बोट 2021", एवं "असम गौरव पुरस्कार" 2023।